ख़ालिद जावेद के चर्चित उर्दू नोवेल का हिंदी अनुवाद

एक ख़ंजर पानी में

ख़ालिद जावेद

अनुवादः

रिज़वान उल हक़

ये यक़ीनन मौत की तीसरी किताब है जिसको हाज़िरे ख़िदमत करते हुए मैं बस दो या तीन बातें कहना चाहता हूँ। सबसे पहले तो ये कि मेरी तमाम पिछली तहरीरों की तरह इस किताब में भी वही ख़राबियाँ मौजूद है जिनकी काफ़ी शोहरत रही है। बल्कि मुमकिन है इस बार पहले से कुछ ज़्यादा ही हों। दूसरी बात ये है कि ज़ुबान का एक काम चीजों की नुमाइंदगी करना जरूर है। मगर किसी भी रचनात्मक आख्यान में शब्द महज़ बाह्य या आंतरिक सच की नुमाइंदगी नहीं करते। वरना इस तरह तो हर आर्ट एक दूसरे दर्जे की वस्तु बन कर रह जाएगा। यानी नुमाइंदगी करने का महज़ एक माध्यम, रचनात्मक भाषा में शब्द आपस में मिलकर जो आख्यान रचते हैं। उसे अपने आपमें एक मुकम्मल और पूर्ण दुनिया होना चाहिए। जाति निर्भर और स्वउद्देश्य सच्चाई। मेरे लिए परेशानी का कारण यही है क्योंकि इन्सानों के शब्द परछाइयों की तरह होते है। और परछाइयाँ रोशनी के बारे में हमें कुछ नहीं समझा सकती। रोशनी और परछाई के दरम्यान की एक धुँधली सतह होती हैं। जहाँ से लफ़्ज़ पैदा होते है। भाषा की ये दो सरहदें जहाँ मिलती है वहाँ खींची गयी एक लकीर पर मेरी तहरीर अकेली और बे यार ओ मददगार भटकती रहती है। अपने मानी की तलाश में जो भाषा के इस दो मुँह वाले रहस्यमय साँप जैसे रवैय्ये की वजह से कभी एक स्थान पर नहीं ठहरते। मुमकिन है कि इस किताब में ये समस्या ज्यादा गम्भीर हो। तीसरी और आख़िरी बात ये कि यहाँ उर्दू के प्रमाणित शब्दकोष, व्याकरण,... वग़ैरा को अमान्य तो नहीं किया गया है, मगर हर जगह बहुत सख़्ती से पाबन्द भी नहीं रहा गया है। इसलिए कि ये किताब दर अस्ल बहते हुए वक़्त और पानी की किताब है।

- ख़ालिद जावेद

उसने बीवी की हाथ से लेकर चाय का कप अपने हाथ में पकड़ लिया। बीवी ने जल्दी जल्दी अपने हाथ को ऊपर नीचे करना शुरू कर दिया। ये उसकी मुद्दतों पुरानी आदत थी। उसे ये वहम था कि बार बार उसका हाथ सुन्न हो जाता है। न तो मेरे अन्दर खून बचा है। सारा खून जल गया है और न ही कुछ और वह बड़बड़ाती। वैसे देखने में वह एक सेहतमन्द और लम्बी औरत थी। जिसे सतही नजर रखने वाले खूबसूरत भी कह सकते है। अगरचे औरत को मर्द से ज्यादा खूबसूरत समझना तमाम जीवों में सिर्फ इन्सानों का ही बेवकूफी भरा फैसला है। औरत अकलमन्द और ताकतवर तो है बशर्ते ताकत को उसके असली मानी में समझा जाए। मगर उसकी खूबसूरती के बारे में हमेशा शक किया जाना चाहिए। क्योंकि वह समाज को बनाती है और समाज पर मर्द से ज्यादा हावी है। चाहे लाख इस समाज को मर्दों का समाज कहा जाए। क्या इस किस्म की कोई भी जब्र करने वाली चीज खूबसूरत होगी, मगर औरत का समाज पर हावी होना इन्सान की नंगी आँखों से हरगिज नहीं देखा जा सकता। उसकी ताकत खून में बाल की तरह बारीक नसों में अपना जाल बना कर समाज की पूरी जेहनियत की संरचना को बनाती है। औरत की ताकत को उस सूक्ष्मदर्शी के जरिए देखा जा सकता है जिससे किसी बैक्टीरिया या वायरस को। कीड़े मकोड़े तक इस मामले में इन्सान से ज्यादा अक्लमन्द है बल्कि कहना चाहिए कि इन्सानी समाज के नारों से ज्यादा समझदार वही है। इसलिए औरत के जिस्म को हसीन समझ लेना एक अंधे जानवर तक के लिए मुश्किल बात है। औरत के जिस्म का हर हिस्सा इतना ज्यादा गैर जरूरी गोश्त से भरा हुआ और थुल थुल करता हुआ चर्बी भरा है कि यही एक बात इस बात की गवाह है कि ये खूबसूरती नहीं है। औरतों के जिस्म का रंग भी कुदरती तौर पर इतना चमकीला नहीं जितना कि एक मर्द के जिस्म का होता है। इसीलिए उन्हें मेक अप की जरूरत पड़ती है। नई नवेली दुल्हन को बगैर मेक अप के ज्यादा दिन देखने से मर्द का दिमाग खराब हो सकता है। दिन में, घास में पड़ा हुआ, सिकुड़ा हुआ पर डाले हुए एक बेसुध नर पतंगा भी अपने रंगों के लिहाज से रात को उड़ने वाली मादा पतंगे से ज्यादा चमकीला है। मर्द तो सिर्फ जंग के लिए पैदा होते है और अब तो जिस तरह की जंग होती है उसमें भी मर्दों का कोई खास काम नहीं रह गया है। अब उनका एक ही काम है कि वह औरतों के पेट में अपना बीज डालते फिरे। एक बद अक्ल आवारा घूमते हुए सांड की तरह और इस तरह उन्हें और भी ज्यादा मजबूत बनाते फिरें। अस्ल हाकिम यकीन मानिए कि औरत ही है। उसने यूँ ही खड़े खड़े चाय का

एक घूँट लिया और फौरन मुँह से उसे बाहर निकालते हुए कुल्ली सी कर डाली। चाए है या जहर? वह चिल्लाया। मेरे मुँह पर ही कुल्ली कर देते ना। वह ज़ोर ज़ोर से अपना हाथ ऊपर नीचे करने लगी और उसके भूरे बालों का जोड़ा खुल कर बिखर गया जिसकी वजह से उसकी एक आँख ढक गयी। वह इसी चेहरे से डरता था जब भी उसकी एक आँख माथे से सरके हुए बालों से ढक जाती और बस एक आँख चेहरे पर नजर आती। उस एक आँख में एक सर्द और खौफनाक हुक्म था। दर अस्ल यही एक अक्ल जालिम हाकिम की आँख थी। किसी देवमालाई किरदार की गुस्सावर आँख। अगर उसके चेहरे पर दोनों आँखें नजर आती रहती तो वह इस गजबनाक चेहरे का मुकाबला भी कर सकता था मगर माथे पर सिर्फ एक बड़ी भूरी और लालिमा भरी आँख घूरती नजर आती है। तकरीबन एक शैतानी आँख जिस पर कभी गुहाई तक निकलने की हिम्मत नहीं कर सकती। वो वाकई डर गया। उसे मालूम था कि बुरी नजर भी एक ही आँख से लगती है और जिस आँख से लगती है उसमें कभी आंसू नहीं होते। चाए का कप उसने एक स्टूल पर पहले ही रख दिया था। उस सूखी आँख से अपनी आँखें फेरते हुए गुस्लखाने में जाकर उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। वह तेज से तेज गर्मी में भी गर्म पानी से ही नहाता था। उसने सबसे पहले गीजर का स्विच आन किया। स्विच आन करने पर हल्का सा स्पार्क करता था। गीजर की लाल बत्ती रौशन हुई मगर उस लाल बत्ती का कोई भरोसा नहीं था। गीजर मे एक अजीब खराबी पैदा हो गयी थी। वह कमी गर्म पानी देता था और कमी बर्फ की तरह ठण्डा। पूरी सर्दियाँ इसी तरह बीत गयी। गर्म पानी की अलामत उस लाल बत्ती के नीचे वो काँपता और ठिठुरता रहा। दरमियान में कभी कभी गर्म पानी का रेला भी आ जाता जैसे ख्वाब में किसी दोस्त का चेहरा नजर आ जाए। वो अपनी मसरूफियत की वजह से (अगर वाकई उसकी कोई मसरूफियत थी) और कुछ इस यकीन की वजह से कि ऐसी अजीब ओ गरीब तकनीकी खराबियाँ जल्दी दूर नहीं होती है। क्योंकि उनका एक अनदेखा रिश्ता इन्सानों के मुकद्दर और नक्षत्रों की चाल से होता है। ये रहस्यमय बाते है और फिलहाल वो रहस्यमय बातों के बारे में सोचना नहीं चाहता था। वो आईने के सामने खड़ा शेव कर रहा था। ये भी एक चटखा हुआ आईना था। चटखे हुए आईने में अपना चेहरा देख कर शेव करने के दौरान अक्सर उससे अन्दाजे की गलती हो जाती। ब्लेड कहीं का कहीं चल जाता। चेहरे पर लगे हुए साबुन के सफेद गाढ़े झागों में खून की लकीरे शामिल हो जाती। आईने का न बदलना यकीनन उसी की

लापरवाही थी मगर वो नहीं जानता था कि आईना चाहे चटखा हुआ न भी हो तब भी हर आईने के सामने खड़े होकर आदमी की आँखें हमेशा अंधेरे में गलती करती है। वह मुस्तकबिल के बारे में तो ज्यादा ही बेखबर हो जाता है। साबुन के सफेद झागों से उसका साँवला चेहरा इस तरह ढक गया जैसे किसी गड्ढे मे काले और सड़ते हुए पानी पर सफेद रेत और चूना डाल कर वक्ती तौर पर ढक दिया जाता है। उसने उस चेहरे से झाँकती हुई आँखों से अपने दाएँ हाथ पर निकले हुए फोड़े के पुराने निशान को देखा। वह हमेशा शेव बनाते हुए उस जख्म के निशान को देखता। ये निशान हथेली के बिलकुल नीचे कलाई पर उस जगह मौजूद था जो गालों पर रेजर चलाते वक्त बार बार दिख जाती थी। अगर ये ज़ख़्म उसके चेहरे पर अपना निशान छोड़ता और किसी फोड़े की वजह से नहीं चाक़ू या तलवार के किसी ख़तरनाक वार के नतीजे में अस्तित्व में आया होता तो किसी भी औरत के लिए उसकी शख़्सियत में सेक्स अपील बहुत बढ़ जाती। उसने शेव करने वाले ब्रुश से कलाई पर आए हुए इस भद्दे निशान पर साबुन के सफ़ेद झाग लगा दिए। बिलकुल उसी तरह जैसे दीवार पर उभरे हुए किसी बदनुमा सीलन के धब्बे पर सफ़ेदी पोत दी जाती है। ग़ुस्लख़ाने की खिड़की के बाहर फैला हुआ पीला ग़ुबार उसी तरह स्थिर व जमा हुआ मौजूद था। आज दफ़्तर पहुँच कर वो उन तस्वीरों से कुछ कोने निकाल कर मकानों के चन्द नक़्शे नमूने के तौर पर बनाएगा। जिनका एलबम कई हफ़्तों की मेहनत के बाद वह हासिल कर पाया था। ये क़ब्रिस्तानों की तस्वीरें थीं और शमशान घाटों की भी। क़ब्रिस्तान में जा जा कर तरह तरह की पक्की क़बरों की तस्वीरें जो उसने ख़ुफ़िया तौर पर अपने कैमरे से ली थीं। कई हफ़्तों से वो शहर के क़ब्रिस्तानों का चक्कर लगता फिर रहा था। कभी फ़ातिहा पढ़ने के बहाने कभी किसी अज़ीज़ या दोस्त की क़ब्र तलाश करने के बहाने और उन दिनों किसी का अंतिम संस्कार तो उसने छोड़ा ही नहीं थी क्योंकि क़ब्रिस्तान तक जाने का कोई मौक़ा वो हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। क़ब्रिस्तान के चारों ओर अब चार दिवारी बना दी गयी थी और बेवजह क़ब्रिस्तान में घूमने फिरने वाले को शक की नज़र से देखा जाने लगा है। वजह ये है कि इन्सान बिज्जू जैसे क़ब्र खोदने वाले जानवर से भी बदतर हो गये हैं। बिज्जू तो फिर भी अपना पेट भरने के लिए क़ब्र खोद कर मुर्दे खाता है। मगर इन्सान तो क़ब्रों से लाशें निकाल निकाल कर विदेशों के मेडिकल कालेजों में स्मगल करने लगे हैं ताकि उनके अंग निकाल कर उन पर नए नए प्रयोग किए जा सकें। प्रयोग तो वो भी करना चाहता था। वो मकानों